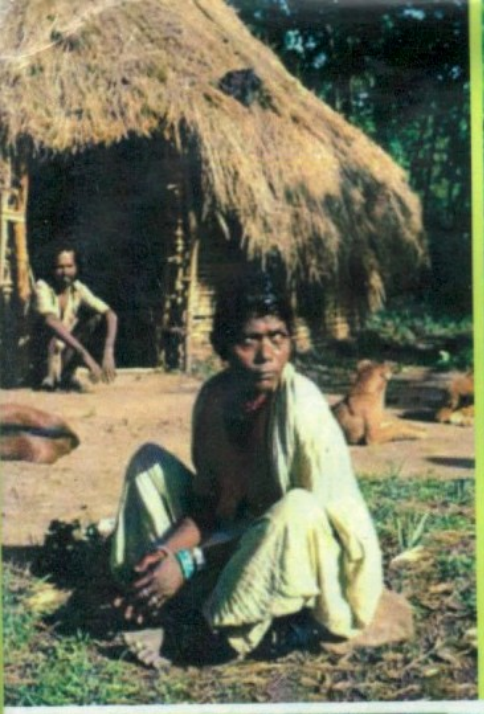

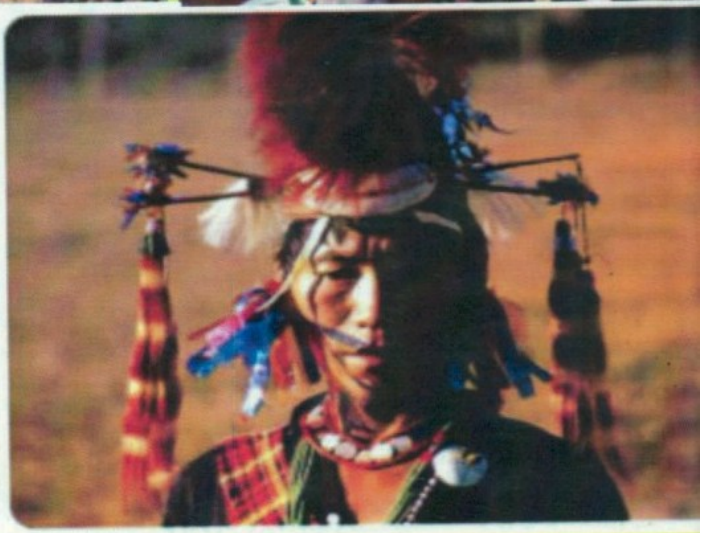

आदिवासी विमर्श
इतिहास और संस्कृति

संघर्ष एवं नए जीवन के सपने

सं.डॉ.विनोद विश्वकर्मा

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 011-22911223
ईमेल: jtspublications@gmail.com

© सं.डॉ.विनोद विश्वकर्मा

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN 978-93-85833-24-3

मूल्य : 695 रुपये

वैधानिक चेतावनी :
प्रस्तुत पुस्तक में संकलित आलेख विविध लेखकों के हैं, पुस्तक में आलेख शामिल करने के लिए संपादक से वैचारिक मेंल आवश्यक नही है। सभी विचारों - अवधारणाओं के लिए आलेख लेखक ही जिम्मेदार हैं। किसी भी विवाद की स्थिति के लिए सम्पादक, प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा। पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन - फोटो कापी इलेक्ट्रानिक माध्यमों में उपयोग के लिए सम्पादक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय सतना ही मान्य होगा।

आवरण सज्जा : राजीव कुमार शर्मा, दिल्ली - 53

शब्द-संयोजन : पंकज कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, दिल्ली

अनुक्रम

भूमिका .....आदिवासी अस्मिता : संघर्ष एवं चुनौतियाँ
डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा ३
१. आदिवासी जीवन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अछूते प्रसंगों
का जीवंत दस्तावेज है 'जंगल के गीत'
अनुज लूगुन १२
२.आदिवासी विमर्श : कहने को तो भारत मूल रूप से आदिवासियों का ही देश है.
डॉ० विनोद विश्वकर्मा १८
३.भारत का राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासियों की भूमिका
डॉ. आनन्दसिंह पटेल २८
४.आदिवासियों का स्वतंत्रता संघर्ष सामारिक महत्व
डॉ० ऊषा मिश्र ३४
५.भारत का राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासियों का संघर्ष
डॉ. आशुतोष कुमार द्विवेदी ४०
६.आदिवासी समाज का यथार्थ काफी अलग रहा है
नंदी पटोदिया ४५
७. आदिवासी महिलाओं पर जुल्म की दास्तान
डॉ. कमलेश सिंह नेगी ५३
८.आदिवासी स्त्री : साहसिक और प्यारपूर्ण जीवन संस्कृति
डॉ. कुसुम माधुरी टोप्पो ६३
९.आदिवासी चिंतन : सपने, संघर्ष और चुनौतियां एवं वर्तमान समय
मौ.रहीश अली खा ६९
१०.हाशिए पर आदिवासी समाज और संस्कृति
रणजीत कुमार सिन्हा ६९
११.साहित्यिक विमर्श और आदिवासी प्रश्न
डॉ. अरविन्द कुमार ७६
१२.आदिवासी विमर्श : अस्मिता के स्वर और भूमंडलीकरण
अजीत कुमार पटेल ९१
१३.आदिवासी समाज : जीवन और संघर्ष
संजीव कुमार विश्वकर्मा ९६

६

आदिवासी समाज का यथार्थ काफी अलग रहा है

नंदी पटोदिया

आदिवासी समाज का यथार्थ आदिवासियों के भौगोलिक जीवन में दिखाई पड़ता है। आदिवासी समाज, हिन्दू समाज के रीति-रिवाजों और परम्पराओं से काफी अलग रहा है। ये समाज प्रारम्भ से ही अलग समाज में अपना जीवन बसर करने वाला वर्ग है। जंगली जानवरों के अलावा जंगली फल और फूल से अपना भोजन करता है। आदिवासी समाज हमेशा मुख्यधारा के समाज से भिन्न है। लेकिन हिन्दू समाज से उनकी अपनी अलग पहचान है। आज आदिवासी समाज को जल, जंगल और जमीन से अलग किया जा रहा। 'विपिन तिवारी के अनुसार- 'दर असल अंग्रेजी सरकार प्राकृतिक संसाधनों पर से आदिवासी समाज को खदेड़ना चाहती थी। इसलिए तो वह आदिवासी समाज को मुख्य समाज से अलग एक समाज मान रहे थे और न ही आदिवासियों का जल-जंगल-जमीन पर अधिकार मानने को तैयार थे। इन दोनों बातों को न मानने के पीछे कुछ निहित स्वार्थ थे। यदि अंग्रेज सरकार इस बात को स्वीकार कर लेती कि आदिवासी समाज मुख्य समाज से इतर एक अलग तरह का समाज है तब उनके अपने हित नहीं पूरे हो सकते थे। इसलिए उन्होंने इस बात को स्वीकार नहीं किया। लिहाजा अब प्राकृतिक संसाधनों पर राज्य का अधिकार माना गया। इसी नीति के तहत जब अंग्रेजी सरकार ने जंगलों पर अपना अधिकार जमाना शुरू किया। आदिवासियों और सेना के बीच संघर्ष यह दौर कमोवेश आज भी चल रहा है। वैसे-वैसे आदिवासियों के साथ संघर्ष कोई नई बात नहीं थी। अंग्रेजी शासन से पहले भी जो शासक रहे हैं उनके साथ भी आदिवासियों का संघर्ष होता रहा है। लेकिन उस संघर्ष और इस संघर्ष में मूलभूत अंतर है पहले के शासक आदिवासियों पर हमला करते थे और लूटपात करके चले जाते थे लेकिन अंग्रेजी सरकार जो उनको उनके ही इलाके से बाहर करने के लिए प्रयास कर रही थी। प्रो. वीर भारत तलवार एक साक्षात्कार में कहते हैं- आदिवासी हमेशा स्वतंत्र समाज के रूप में रहते हैं। वे जिन इलकों में